पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

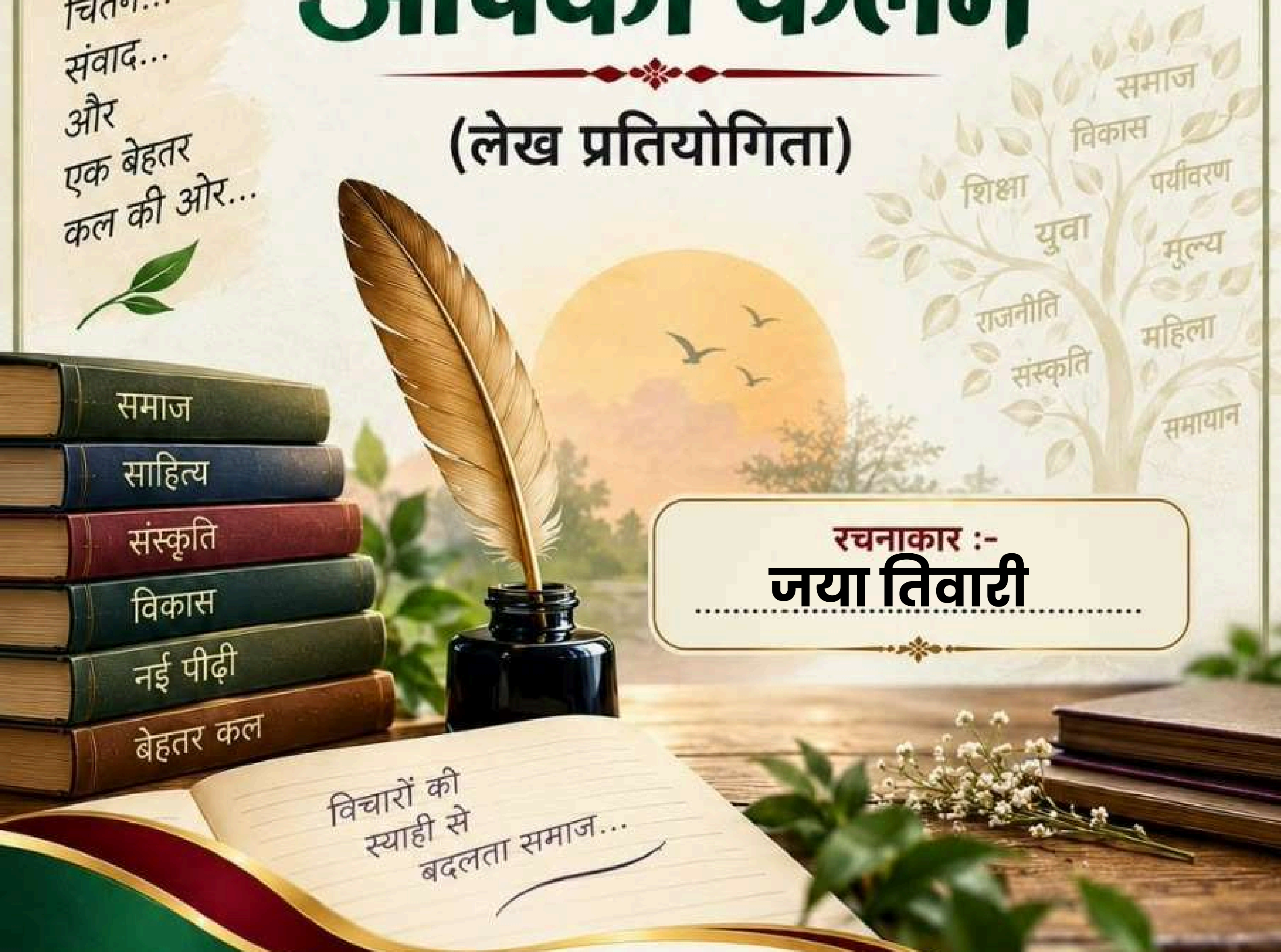

रचनाकार :-
जया तिवारी

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी से ही है पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - जया तिवारी

वर्तमान में छात्र शिक्षक और अभिभावक

वर्तमान में छात्र शिक्षक और अभिभावक

गुरुर ब्रह्मा गुरुर विष्णु गुरु देवो महेश्वरा ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमा। ।

धीरे-धीरे बदलते समय के साथ इस श्लोक का अर्थ भी बदलते जा रहा है। एक दौर था जब शिक्षक का सम्मान किया जाता था। शिक्षक को ईश्वर से भी ऊंचा दर्जा दिया जाता था। शिक्षक की बात मानी जाती थी, एक शिक्षक के प्रति छात्र के मन में सम्मान का भाव होता था। लेकिन आज की समय में धीरे-धीरे यह सम्मान वी भाव समाप्त होता जा रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि हम जो 1980 या 1990 तक के दौर के हैं, जो अपनी समय में अपने शिक्षकों का सम्मान करते थे। हम ही आज शिक्षकों पर उंगली उठा रहे हैं। अपनी बच्चों को शिक्षकों से वाद विवाद करना सीख रहे हैं। एक स्वस्थ मानसिकता को विकसित करने की बजाय हम आज अपने बच्चों को सिखाते हैं की हर बात का जवाब दो बात चाहे सही हो या गलत।

आज के अभिभावक बच्चों को धीरे-धीरे अपंग बनने जा रहे हैं। बच्चों के हर छोटे बड़े कार्य स्वयं करते हैं या करवाए जाते हैं। स्कूल भेजने पर अभिभावकों को शिक्षकों से शिकायतें रहती हैं। और यह शिकायत है कभी-कभी जायज और कभी नाजायज भी होती है।

जैसे - उनके बच्चे का मन स्कूल में लग नहीं रहा है, या किसी गतिविधि में उनका बच्चा आगे नहीं है, स्कूल में कराई कोई प्रतियोगिता में उनका बच्चा आगे नहीं है, और या फिर उनका बच्चा शिक्षक अध्यापिका आज से बात करने में कर रहा है। जैसी कई शिकायत है। लेकिन हां यह भी सत्य है की सभी अभिभावक एक जैसे नहीं होते लेकिन वर्तमान में बहुत ही काम अभिभावक ऐसे हैं जो शिक्षकों को सहयोग करते हैं और अपने बच्चों को सही और गलत तथा बड़ों का सम्मान करना सिखाते हैं।

आज के समाज में शिक्षक की स्थिति बहुत ही दयनीय होती जा रही है। बदलते एजुकेशन सिस्टम, बदलती सोच जहां छात्रा को चुनौतियां दे रही हैं वहीं एक शिक्षक को चुनौतियों का पहाड़ दे रही है। एक शिक्षक बनने तक का सफर कठिन तो नहीं, लेकिन हां शिक्षक बने रहने का सफर जरूर कठिन है। स्कूल में ना बच्चों को डांटना है ना ही मारना है लेकिन पढ़ाई में अव्वल बनाना है। घर पर बच्चों के माता-पिता फोन पर रील बनाते हैं और बच्चों से भी बनवातें हैं। लेकिन जब बच्चा जरूर से ज्यादा फोन देखने लगे तो P.T.M में आकर शिक्षकों को बोला जाता है कि इसे डराइए यू आर दिन को फोन देखा है। और यदि शिक्षक पढ़ाई से संबंधित कुछ भी सामग्री फोन पर भेजें तो शिक्षक को बोला जाता है कि स्कूल का सारा कार्य स्कूल में ही करवाया जाए। लेकिन यदि माता-पिता द्वारा बच्चों की रील बनाकर सोशल मीडिया पर डाली जाए तो समय की बर्बादी नहीं होती है और साथ ही बच्चा स्मार्ट बनता है। समझ नहीं आता यह समाज की कैसी विडंबना है।

आज का अभिभावक यह सोचता है कि उसने बच्चे को स्कूल भेजा है, वह बच्चे की फीस जमा करता है तो उसका पढ़ाई का फर्ज पूरा हो गया । बाकी बच्चे को पढ़ाई करने से लेकर उसमें अच्छे संस्कारों को विकसित करना अध्यापक का ही कार्य है। हालांकि अभिभावकों पर यह बात लागू नहीं होती।

मैं यह बात अपने 12 वर्षों के शैक्षणिक अनुभव के आधार पर लिख रही हूं । मेरे शैक्षणिक सफर में विद्यालय और बच्चों के काफी खट्टे- मिट्ठे अनुभव रहे । आज भी मेरी पढ़ाए कुछ बच्चे ऐसे हैं जिन्हें दसवीं पास किए दो-तीन या 4 साल हो गए हैं। और विद्यालय छोड़े हुए भी। लेकिन फिर भी जन्मदिन हो, शिक्षक दिवस हो या फिर गुरु पूर्णिमा ; वह बच्चे आज भी बधाई संदेश भेजना नहीं भूलते। शायद इन्हीं बच्चों की वजह से हमें खुश होने व गर्व महसूस करने की वजह मिलती है। लेकिन वही कुछ बच्चे या कहें अधिकांश बच्चे आज के समय में ऐसे हो गए हैं,वो चाहते हैं कि बिना पढ़े वह कक्षा की श्रेष्ठ सूची में आ जाए और बिना कोशिश के उनका हस्तलिखित सुंदरतम हो जाए। लेकिन क्या ऐसा संभव है?

मैं यह सब इसलिए लिख रही हूं कि अगस्त व सितंबर माह में मेरे साथ कुछ घटनाएं ऐसी घटी जिन्होंने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। सभी जानते हैं कि निजी विद्यालयों में कार्य का दाबाव अत्यधिक रहता है, जिसको कि मैं बहुत ज्यादा गंभीरता से नहीं लेती हूं।
क्योंकि मेरा मानो है कि यदि मैं अपने घर से निकाल कर 6 घंटे विद्यालय को दे रही हूं उसे समय में खाली बैठने से ज्यादा अच्छा है कि मैं कुछ काम कर लूं। मुझे खाली बैठना या समय व्यतीत करना शुरुआत से ही अच्छा नहीं लगता। मैं अपनी तरफ से कोई जिम्मेदारी के साथ काम करती हूं । घर से स्कूल और स्कूल से घर का सफर पूरा करने में मुझे पूरे 9 घंटे लग जाते हैं। लेकिन बावजूद उसके घर आने के बाद भी मैं अभिभावकों व बच्चों के फोन उठाती हूं व उनकी समस्याओं को सुनती हूं और यथासंभव उन्हें दूर करने का प्रयास भी करती हूं।

मैं अपने कार्य को ईमानदारी वह कर्तव्य निष्ठा से पूरा करने की कोशिश करते हूं। लेकिन उसके बाद भी कभी-कभी मन विचलित हो जाता है और इस बीच काफी अंतर्द्वंद मन में रहा। जिस अंतर्द्वंद का कारण विद्यालय में घटित कुछ घटनाएं थी।
पिछले 2 माह में मेरे साथ जो घटना घटी, मैं उनसे विचलित हो उठी।

जिसमें पहली घटना- मैं कक्षा आठवीं के बच्चे की कॉपी चेक कर रही थी; जिसमें की गंदे हस्तलेख की वजह से मैंने एक छोटी सी टिप्पणी लिख दी- 'लेख सुधारने की कोशिश करें'और साथ ही बच्चे को डांटते हुए बोला कि- 'कई बार कहने के बाद भी है आप लेख सुधारने की कोशिश नहीं करते।'
इस पर बच्चों का जवाब था- 'मेरी लेख सुंदर है ;चाहे तो आप मम्मी से पूछो और मम्मी ने कहा है कि तुम्हें और कोशिश करने की जरूरत नहीं है।'
शाम को घर आने के पश्चात मैंने सोचा कि एक बार बच्चें की मां से फोन पर बात कर ली जाए। और मैं फोन किया- वह अभिभावक बहुत ही आदर से बात कर रहे थे। लेकिन उन्होंने कुछ ऐसी बात कहीं जो ना कभी कक्षा में हुई और ना ही शायद वो मेरे आचरण और व्यवहार में थी। बातें सुनकर मुझे ऐसा लगा कि एक छोटा बच्चा जिसका अब सही तरीके से विकास होता व वह सही वह गलत में अंतर करना सीखता वह गलत तरीके से अपने माता-पिता को गुमराह कर रहा है। खैर अगले दिन मैंने उस विषय पर कक्षा में बात करी तो बच्चा भी समझा होगा। लेकिन इस घटना ने मेरे सामने कई सवाल खड़े कर दिए। आज का बच्चा कौन सी दिशा में जा रहा है वह अपनी गलती छुपाने के लिए छोटा -बड़ा ,गुरु -शिष्य कुछ भी नहीं देखता। कुछ दिनों तक यह घटना मुझे विचलित करते हैं और उसके बाद मैं इसे भूल गई।

मैं जहां अभी पढ़ रही हूं वहां पर मुझे 2 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। पहले तो मेरा मन वहां नहीं लग रहा था लेकिन धीरे-धीरे मन लगने लगा और बच्चों से लगाव भी होने लगा। लेकिन आजकल के बच्चे से एक भावात्मक रिश्ता बनाना बहुत कठिन हो रहा है। शायद इसके पीछे हम एक अभिभावक के रूप में अपने बच्चों के लिए कुछ ज्यादा ही चिंतित रहते हैं। आजकल के समाज को देखते हुए उन्हें छोटी उम्र में ही कई बातें जो कि उनकी सुरक्षा के लिए जरूरी है; बताते हैं। जैसे अप्रैल के महीने में, मैंने कक्षा 5 के बच्चों को गुड टच और बेड टच के बारे में बताया। जो कि आज के किस समय के हिसाब से जरूरी था। लेकिन इसके दो-चार दिन बाद दो बच्चियां है मेरे पास आई और एक बच्चे का नाम लेते हुए उन्होंने कहा कि इसने हमें बेड टच किया। उनकी बात सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि वह बच्चा उन बच्चों की तरह पूर्ण रूप से सामान्य नहीं था। और यह सारी बातें मेरी आंखों के सामने ही हुई थी। लेकिन बच्चों की सामान्य नोंक-झोंक , लड़ाई झगड़ा ऐसा समझ कर मैंने उस ओर ध्यान नहीं दिया। क्योंकि ध्यान देने जैसा कुछ था भी नहीं। वह बच्चों का एक सामान्य झगड़ा था। लेकिन इस बात में मुझे यह सोचने पर मजबूर किया कि बच्चें शिक्षक की बात को ध्यान से सुनते व समझते हैं। और बहुत ज्यादा गंभीरता से भी लेते हैं।

इन सब के साथ मैंने यह भी अनुभव किया कि यदि बच्चे को उसकी गलती बताई जाए तो वह जल्दी से माननेको तैयार नहीं होता है। बहुत गलती हो किसी और को डालने की कोशिश करता है फिर चाहे वह उसका साथी हो या शिक्षक हो। इससे संबंधित एक घटना तुम्हें बताऊंगी। उससे पहले अपने विद्यालय के बारे में कुछ बताना चाहती हूं। हमारे विद्यालय में जो बच्चा अपना कक्षा कार्य या गृह कार्य पूर्ण नहीं करता। उसे विद्यालय की छुट्टी के बाद अतिरिक्त समय के लिए विद्यालय में रोका जाता है और उसका कार्य पूर्ण करवाया जाता है। और यह कार्य प्रधानाचार्य जी की देखरेख में होता है। वह भी अतिरिक्त समय के लिए विद्यालय में रूकती है और बच्चों के कार्य पूर्ण कर चुकने के बाद ही वह जाती है। हर हफ्ते कोई दो या चार बच्चें विद्यालय परिसर में बैठकर अपना कार्य फोन करते हैं।

एक दिन मेरी कक्षा की दो बच्चियों का गणित का कार्य पूर्ण नहीं था। विद्यालय के नियम अनुसार उस दिन उन दोनों बच्चियों को अतिरिक्त समय के लिए विद्यालय में रुकना था; जो कि बच्चों को बिलकुल गवारा न था। वे चुपके से घर जाने के मौके में थी। लेकिन उनकी उम्मीदों के विपरीत मैं उन्हें प्रधानाचार्या जी के पास ले गई; लेकिन उनके अनुरोध कर व अगले दिन कार्य पूर्ण करके लाने के वादे पर प्रधानाचार्य जी ने उन्हें घर जाने की अनुमति दे दी। लेकिन उसे घटना में उनमें से एक बच्चे के मन में मेरे प्रति घृणा का भाव भर दिया । क्योंकि मैं उन्हें जबरदस्ती प्रधानाचार्य जी के पास ले गई थी। मेरा निर्णय के बच्चों के हित में था लेकिन बच्चों ने उसे नकारात्मक तरीके से लिया और उसी नकारात्मकता में बच्ची ने अपनी मां को भी मेरे बारे में कुछ नकारात्मक बातें बोली और साथ ही उसने अपनी मां को बताया कि वह मेरे साथ कक्षा में सहज महसूस नहीं करती। और उसे मेरा पढ़ाया हुआ समझ में नहीं आता। आजकल यह बच्चों का बहुत अच्छा बहाना है कि ऐसा बोलकर वह विषय अध्यापिका कक्षा अध्यापिका को बदलवा लेंगे। उसे बच्चों की विपरीत मेरी कक्षा में कोई बच्चा ऐसा नहीं था जिस की मेरे व्यवहार या मेरे पढ़ाने से कोई परेशानी हो। यहां तक की बच्चे मेरे साथ इतना अपनापन महसूस करते की छोटी बड़ी बात मुझसेसाझा करते हैं। सच्ची नहीं मेरी प्रति मन में एक गांठ बना ली। फिर कुछ दिन बाद मैं इस बात को भूल गई थी क्योंकि हर दो चार दिन बाद एक या दो बच्चें विद्यालय में रुकते ही थे।

इसकी एक माह वही दो लड़कियां मेरी कक्षा में अंतिम पीरियड में कक्षा में नहीं आई। 10 मिनट तक रुकने के बाद मैंने एक बच्ची को उन्हें ढूंढने भेजा वह बच्ची विद्यालय में प्रथम तल ,द्वितीय तल, तृतीय तल, डांस रूम और म्यूजिक रूम में उन्हें खोज आई लेकिन वह दोनों नहीं मिली। क्योंकि वह दोनों बिना किसी को बताएं नर्सरी कक्षा में बैठकर अपने दूसरे विषय का काम कर रही थी। छुट्टी से लगभग 5 मिनट पहले वह कक्षा में आई। लेकिन मैंने उन्हें कक्षा में प्रवेश नहीं दिया और बाहर ही खड़े रहने को कहा। क्योंकि मैं चाहती थी की बच्चियों को उनकी गलती का एहसास हो और आगे से वह ऐसी गलती ना करें।

इसका कारण था कि यदि इस समय उनके साथ कोई दुर्घटना हो जाती तो सबसे पहले उसका पूरा श्रेय मुझे और फिर विद्यालय प्रबंधन को जाता। किसकी वजह से मैं बच्ची को प्रधानाचार्य जी के पास ले गई लेकिन बाहर खड़ी उसे बच्ची की मां मुझे देख रही थी। जब अंदर सर ने उनसे बात करी और उसके बाद उन्होंने मुझे बोला कि इस विषय में मैं उनकी माता को भी सूचित कर दूं। लेकिन समय की विडंबना मेरा बच्चियों को बाहर ले जाते ही उनकी मां जोर-जोर से चिल्लाने लगी बिना बात जान वह मुझ पर बहुत तेजी से चिल्ला रही थी। विद्यालय में प्रवेश करते हुए उनका रवैया ऐसा था मानो कोई विवेकहीन व्यक्ति चिल्ला रहा हो।

मुझे देखते ही सवालों की झड़ी- डांस करना है तो मेरी बेटी, गाना, गाना है तो मेरी बेटी स्टेज में खड़े होना है तो मेरी बेटी, और फिर अगर उसका काम पूरा नहीं होता तो स्टे बैक यह जो सारे काम ऊपर उन्होंने बोले कई अभिभावक ऐसे होते हैं कि अपने बच्चों को इन गतिविधियों में शामिल करने के लिए; जितनी मेहनत हम शिक्षक विद्यालय में करते हैं उससे ज्यादा वह घर पर करते हैं। लेकिन उनकी माता के इस तरह के शब्द और विद्यालय में शिक्षकों द्वारा चुप करने पर भी वह और तेज से चिल्लाए जा रही थी। उसे समय उनकी बेटी के चेहरे पर जो भाव थे उन्हें देखकर लग रहा था कि मानो उसकी कोई इच्छा पूरी हो रही हो। बिना डरे वह झूठ बोल रही थी केवल मेरे बारे में ही नहीं बल्कि कक्षा में करवाई जाने वाली गतिविधियों के बारे में भी। बहुत मुश्किलों के बाद लगभग 15 से 20 मिनट के बाद उसकी मन शांत हुई। प्रधानाचार्य मैडम ने उन्हें समझाया की विद्यालय में बच्चों को अतिरिक्त समय के लिए रुकवाना व उनके कार्य पूर्ण करवाना ये शिक्षकों का नहीं बल्कि उनका निर्णय है। प्रधानाचार्य जी के बहुत समझाने पर वह घर गई। उनकी इस गतिविधि से जहां कुछ अभिभावकों के मन पर प्रसन्नता के भाव थे वहीं विद्यालय के बच्चों के मन में आश्चर्य के भाव थे। क्योंकि जो -जो आप आरोप उन्होंने मुझ पर लगाए वह मेरे व्यवहार और स्वभाव के बिल्कुल विपरीत थे। लेकिन मैं इस घटना से बहुत ही ज्यादा विचलित हो गई घर आने के बाद भी मेरा मन शांत नहीं हुआ और ना ही घर के अन्य कार्यों में लगा।

मेरी मानसिक शान्ति भंग हो गई। और तब मैं निर्णय लिया कल मैं विद्यालय में जाकर बात करूंगी और विद्यालय में अपना त्यागपत्र दे दूंगी। क्योंकि इस तरह मानसिक रूप से परेशान होकर मैं ना तो विद्यालय में कार्य कर पाती और ना ही घर पर यह मेरे मानसिक स्वास्थ्य के लिए सही नहीं था। जब मैं विद्यालय पहुंची प्रधानाचार्य जी के कक्ष में गई। उन्होंने मुझे बहुत ही अच्छी और प्यार से समझाया कि किसी एक बच्चे की वजह से मुझे यह निर्णय नहीं देना चाहिए। उनकी बेटी जो हमारे ही विद्यालय में पढ़ती है उसने घर जाकर उनसे पूछा कि छुट्टी के समय विद्यालय में शोर क्यों हो रहा था? जब उन्होंने कारण बताया तो बहुत ही आश्चर्य के साथ बोली कि “जया मैम से ऐसा कहा?” लेकिन वह तो ऐसी है ही नहीं। मैं उनकी बेटी को नहीं पढाती ।जिस बच्चे को मैं नहीं पढ़ाती हूं। वह भी मुझे जानता है कि मेरा स्वभाव कैसा है? मुझे कुछ तसल्ली तो हुई, और फिर जब मैं कक्षा में पहुंची तो बच्चों ने मेरा बहुत ही अच्छे तरीके से स्वागत किया।

उन्हीं बच्चों में से एक बच्ची मेरे पास आई और बोली कि मैम आप कल की बात के बारे में मत सोचिए।क्योंकि उस अभिभावक की छवि शायद बच्चों के मन में अलग थी। मेरे कारण पूछने पर बच्ची नहीं बताया कि उनका स्वभाव ही ऐसा है और यह उनके लिए एक आम बात है।

उसकी अतिरिक्त भी कुछ और बच्चों ने मुझसे ऐसी की बातें कहीं। कुछ बच्चे ऐसे भी थे जो उनकी माता के व्यवहार से बहुत प्रसन्न थे। उन बच्चों का मानना था कि आगे से किसी भी शिक्षक की हिम्मत नहीं होगी हमें विद्यालय में रोकने की। बच्चों के इस तरह दोनों मतों को समझने के बाद मेरे मन में विचार आया की विद्यालय में तो हम हर एक बच्चे को एक ही तरीके से समझते और बताते हैं कोशिश यही रहती है की बच्चों के मन में नकारात्मकता ना आए और बच्चा हर एक बात को सकारात्मक तरीके से ले। लेकिन बच्चों के दोनों मतों को देखकर मुझे लगा कि घर और हमारे आसपास के वातावरण का भी बच्चों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि यदि बच्चा अपनी अभिभावकों से बहुत अधिक डरता है। तो वह उनसे बातें छुपाता है, झूठ बोलता है और किसी भी तरीके से अपने को सही साबित करने की कोशिश करता है। जो भी हो इन सभी घटनाओं से व आजकल स्कूलों के माहौल को देखते हुए मुझे लगता है कि शिक्षक की स्थिति आज के समय में बहुत बुरी होती जा रही है।

अगले दिन कक्षा में अगले दिन कक्षा में जब मैं बच्चों से बात करी और सभी बच्चों से फीडबैक लिया तो मैंने देखा कि वह दो बच्चियां अभी अपनी बात को सही साबित करने के लिए झूठ ही बोल रही थी। अगले दिन हमारे विद्यालय में पेरेंट्स टीचर मीटिंग थी मैं उन दोनों बच्चियों को अपने अभिभावकों के साथ आने को बोला। पेरेंट्स टीचर मीटिंग में दोनों के अभिभावक आए। पहली अभिभावक वह चिल्लाने वाली महिला ही थी।

पहले मैंने उसे बच्ची से पढ़ाई के विषय में पूछा उसकी कॉपी जो चेकिंग के लिए मेरे पास आई थी वह मैंने उसे लौटाई। फिर मैंने उसकी मां सेउस घटना के बारे में पूछा- कि आपका व्यवहार ऐसा क्यों था? इस पर उनका जवाब था कि उनकी बच्ची पढ़ने लिखने में बहुत अच्छी है अपना काम भी पूरा करती है और इसके बाद यदि उसे अतिरिक्त समय के लिए विद्यालय में रोका जाता है तो यह उन्हें बिल्कुल भी मंजूर नहीं। बच्ची पढ़ने में बहुत तेज तो नहीं लेकिन सामान्य जरूर है। मैंने उनसे पूछा कल तुम्हारे बोलने का तरीका अच्छा था? पहले तो वह नि:शब्द थी। लेकिन उसके बाद फिर वही बात की मेरी बेटी की गलती नहीं है, वह गलती नहीं कर सकती, आपकी दूसरी अध्यापिका की और विद्यालय की गलती है। मैंने उनसे पूछा जिस तरीके से आप मुझसे बातें कर रही थी यदि मैं उस तरीके से आपसे बात करती तो आपको कैसा लगता? ऐसा सुनकर वह जरूर नि:शब्द थी। क्योंकि वह अच्छी तरह से जानती थी कि मेरी जगह यदि कोई और शिक्षक या शिक्षिका होती तो उनकी बात का इस तरीके से उन्हें उत्तर मिलता। लेकिन शायद मेरे संस्कारों ने मुझे रोका था।

यह बात मैंने उनसे भी बोली कि सामने वाला चाहे किसी भी तरीके से बात कर रहा है पर मेरे संस्कार मुझे इस बात की आज्ञा नहीं देते कि मैं गलत लहजे या गलत शब्दों का प्रयोग करूं।
उसके बाद जब घर को जा रही थी तो उनके चेहरे पर एक अजीब सी खामोशी थी। पता नहीं उन्हें अपनी गलती का एहसास था या नहीं लेकिन मेरे मन में जो बातें थी वह मैंने उनसे बहुत ही प्यार से बोली और उसके बाद मेरा मन काफी हल्का हुआ।
 स्कूल में इस तरह की घटनाएं अक्सर होते रहती हैं। बल्कि आजकल यहां आम बात हो गई है। कि विद्यार्थी और उनके माता-पिता स्कूल में आकर स्कूल प्रबंधन या शिक्षकों को कुछ भी बोले। कभी मैं सोचती हूं की जो हमारा समाज बदल रहा है ,बच्चे बदल रहे हैं, अभिभावक बदल रहे हैं कल इसका असर किस पर पड़ेगा? क्योंकि विद्यालय तो चल ही रहे हैं विद्यालयों में प्रवेश आ रहे हैं हालांकि शिक्षकों का कार्य दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है लेकिन बावजूद इसकी शिक्षक अपने कार्य को बहुत ही ईमानदारी के साथ निभाते हैं पूरी तन्मयता के साथ अपने काम को पूरा करते हैं। विशेष पर महिला शिक्षिकाएं क्योंकि उन पर विद्यालय के साथ-साथ उनके घर की जिम्मेदारियां का बोझ भी होता है। लगभग 6 घंटे हम विद्यालय में काम करते हैं और उसके बाद लगभग 1 से 2 घंटा हम घर पर भी स्कूल का ही काम करते हैं। अपने बच्चे देखते हैं, परिवार देखते हैं सारी जिम्मेदारियां को पूरा करते हैं। समझ नहीं आता है कि जब हम इतनी ईमानदारी से कम कर रहे हैं कमी कहां पर आ रही है कि आज के बच्चे अपनी सही राह से भटक रहे हैं, अपने संस्कारों से भटक रहे हैं और अपनी जिम्मेदारियों से भी भाग रहे हैं। मैं हर रोज कोशिश करती हूं की बच्चों को कुछ नया सिखाऊं, कुछ नया कराऊं और यह सारा काम अगर मैं स्कूल में अकेले कर लिया तो ठीक है लेकिन अगर कुछ कार्य अभिभावकों को करना पड़े तो वह उन पर बहुत भारी पड़ता है।
मैं एक शिक्षिका होने के साथ-साथ एक अभिभावक भी हूं। स्कूल से घर आने के बाद में अपना काम तो करती ही हूं साथ ही बच्ची का भी कुछ काम यदि उसने उसे मेरी मदद चाहिए तो मैं अवश्य करने की कोशिश करती हूं।
मुझे लगता है कि वर्तमान समाज में शिक्षक की छवि जो दिन पर दिन बदलती जा रही है। उसके लिए मात्र बच्चे ही जिम्मेदार नहीं है बल्कि माता-पिता और कहीं-कहीं शिक्षक भी जिम्मेदार है। आजकल हम बच्चों के साथ एक दोस्त की तरह या मां की तरह ज्यादा घुलने -मिलने की कोशिश करते हैं, शायद यही वजह है की बच्चों के मन से सम्मान खत्म होता जा रहा है। हम लोगों को समय-समय पर सीबीएसई की मीटिंग अटेंड करनी होती है। अधिकतर मीटिंग का टॉपिक यही रहता है, की बच्चों पर बोझ न डालें। पढ़ाई को रूचिकर बनाएं। बच्चों को अधिक से अधिक गतिविधि कराए ।
और केवल मनोरंजन के माध्यम से ही बच्चों को सब कुछ सीखने। बच्चों पर मानसिक दबाव नहीं बनाना है। क्योंकि इससे बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा? क्या कभी किसी ने सोचा है?

एक कि सप्ताह में जब सातवें दिन रविवार आता है और उसे दिन शिक्षकों की कोई ना कोई मीटिंग या ट्रेनिंग हो जाती है। और हर ट्रेनिंग में टीचर को अपने ऊपर काम करना है। अपनी सहनशक्ति बनानी है। अपना शब्दकोश बढ़ाना है, अपना सामान्य ज्ञान बढ़ता है, अपनी छुट्टियां कम करनी है, घर जाने के बाद भी स्कूल का काम करना ही है। कभी-कभी मैं यह सोचती हूं की शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य पर इन सब का क्या प्रभाव पड़ता होगा? शायद ही कोई शिक्षक होगा जो अपने कार्य के प्रति समर्पित ना हो या बच्चों को सीखने के लिए कोई नए तरीके ना सोचता हो। क्योंकि कक्षा में अध्यापक को ही पता होता है कि उसकी कक्षा का कौन सा बच्चा किस तरीके से सीखेगा। लेकिन फिर भी शिक्षक को इन सभी मीटिंग में नए-नए तौर तरीके सिखाए जाते हैं। और मुझे लगता है कभी-कभी कहीं ना कहीं की मानसिक स्वास्थ्य पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। जब शिक्षक मानसिक रूप से शांत नहीं होगा तो वह अपनी कक्षा को सुचारू रूप से कैसे चल पाएगा? वर्तमान समय में शिक्षक को एक यंत्र की तरह कार्य करना पड़ रहा है। कार्य का बोझ इतना अधिक है चाहे वह सरकारी टीचर है या प्राइवेट टीचर। सरकारी टीचर से जनगणना,एस. आई.आर.और भी न जाने कितने ऐसे काम करवाए जाते हैं। वहीं प्राइवेट टीचर के कामों की तालिका भी काफी लंबी है। मुझे लगता है कि शिक्षकों की इस स्थिति में सुधार के लिए भी कोई कदम जरूर उठाए जाने चाहिए। शिक्षक एक समाज की नीव रखता है। आने वाले समाज का, बच्चों के भविष्य का निर्माण कर्ता होता है। लेकिन यह दोनों ही कार्य वह अकेले नहीं कर सकता। इन दोनों कामों को करने के लिए शिक्षक, अभिभावक व छात्र इन तीनों के बीच एक स्वस्थ मानसिकता व स्वस्थ साझेदारी का होना जरूरी है। जब इन तीनों के बीच संबंध सही होंगे तीनों अपने-अपने कामों को सही तरीके से करेंगे तभी एक सुंदर और स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है। और शिक्षक जिन्हें देवता से भी ऊंचा स्थान दिया गया है, उन्हें सबसे ज्यादा समर्पण का भाव तो रखना ही है साथ ही भविष्य निर्माता के रूप में अधिक कार्य का बोझ अपने ऊपर लेकर अपनी जिम्मेदारियां को पूरा करना है।

साथ ही मुझे लगता है कि जिस तरह शिक्षकों के लिए समय-समय पर ट्रेनिंग का आयोजन किया जाता है इस तरह 6 महीने या साल भर में एक बार अभिभावकों को भी इस अभियान का हिस्सा जरूर बनना चाहिए। क्योंकि हो सकता है की ऐसा एक कदम उठाने से समाज और शिक्षक की स्थिति में कोई परिवर्तन आए। शिक्षक जिसे देवता के समान माना जाता था ।आज बच्चे बस यह सोचते हैं कि उनकों पढ़ना ,शिक्षकों की मजबूरी है। वह शिक्षक को बस एक यंत्र की भांति समझ रहे हैं।और सोचते हैं कि किसी भी तरह से शिक्षक की गलतियां निकाली जाए। मेरे इस लेख को पढ़ते हुए, अध्यापक या शिक्षक भी मन में कोई सुझाव या विचार आए तो जरूर बताएं या लिखने की कोशिश करें। क्योंकि यह मुद्दा एक सामाजिक मुद्दा है। और मुझे लगता है की हम सभी शिक्षक या अभिभावक के रूप में इन परेशानियों से जूझते हैं ।हम चाहे शिक्षक हैं या अभिभावक है। इन परेशानियों के बारे में विचार करें और किस तरह से इन परेशानियों को सुलझाया जा सकता है। सोचे और अपनी सुझाव अवश्य दें।

यदि कोई अभिभावक इस लेख को पढ़ रहा हो तो इस गंभीर समस्या(वर्तमान में शिक्षक की स्थिति) के ऊपर जरूर सोचें और अपने बच्चों के मन में शिक्षक के प्रति एक अच्छी छवि बनाने की कोशिश अवश्य करें| क्योंकि माता-पिता के बाद शिक्षक ही ऐसा व्यक्ति है जो बच्चों के मां की बात को गहराई से समझ पाता है| और कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि एक माता-पिता से ज्यादा शिक्षक बच्चों को समझता ऐसा मैं अपने अनुभव के आधार पर कह रही हूं| मेरी पढ़ाई हुई एक बच्ची जो इस बार 12वीं पास कर चुकी है| जब वह कक्षा नवी दसवीं में थी| उसे समय मैं उसे हिंदी पढ़ाती थी| वह कक्षा में बहुत ज्यादा बातें करती थी हंसती रहती थी| उसका मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था| शुरुआत में मैंने उसे बच्ची को डांटा और उसे समझाने की भी बहुत कोशिश करी| लेकिन जब उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया| तब एक बार मैंने उसे भावात्मक तरीके से थोड़ा सा द्रवित किया, उसके बाद वह बच्ची मेरे साथ कुछ खुलने लगी| अपने मन की बातें बताने लगी और जब उसने मुझे अपने घर के बारे में बताया तो मुझे बहुत दुख हुआ| और मुझे लगा कि कहीं ना कहीं घर में उसकी बातें सुनी नहीं जाती थी| और अपने घर के माहौल से वह थोड़ा परेशान थी| जिसकी वजह से स्कूल में उन बच्चों को ढूंढते जो उसकी बातों को सुनता फिर धीरे-धीरे वह मुझसे भी अपनी बातों साझा करने लगी उसके बाद मैंने देखा कि वह मेरी बातों को समझती है मानती है और मेरे प्रति उसकी मन में आदर के भाव भी आ रहे है|

उस बच्ची के जवान भाई की मौत हो गई थी इसके बाद उसके माता-पिता में अनबन रहने लगी और वे दोनों ही बच्चों को समय नहीं देते थे| शायद घर में उन दोनों में आपस में उनमें बोलचाल भी बंद थी| जिसकी वजह से वह बच्ची अपनी बातों को खुलकर किसी से कह नहीं पाती थी और वह कोई ऐसा व्यक्ति ढूंढते जो उसकी बातों को सुने|

इस तरह की और भी कई अनुभव है जिन्हें मैं फिर कभी आपके साथ साझा करूंगी|

आप लोगों को लगे शायद मैं एक शिक्षक होने के नाते इस बारे में ज्यादा सोच रही हूं| लेकिन ऐसा नहीं है या हो भी सकता है| क्योंकि मुझे आज भी जब कभी कहीं मेरे शिक्षक मिलते हैं| तो मन बहुत प्रसन्न हो जाता है| और हम उन्हें आज भी वही सम्मान देते हैं जो अपने स्कूल या कॉलेज के दिनों में देते थे| मेरे मन में शिक्षक की छवि एक पथ प्रदर्शक की तरह है| जब कभी मुझे मौका मिलता है तो मैं शिक्षक के ऊपर अवश्य लिखती हूं|

इस शिक्षक दिवस पर मैंने शिक्षक के ऊपर एक कविता लिखी है उसे भी मैं आप सभी के साथ साझा कर रही हूं|

गुरुदेव -------------

बार-बार है नमन आपको हे! गुरुदेव,
प्रथम पूज्य हूं आप हमारें,
ज्ञान दाता, मार्गदर्शक
सही राह दिखलाई हमको
बार-बार है नमन आपको|
सही गलत का भेद बताया
आगे बढ़ना बस बढ़ते रहना
हर ऊंचाई को छू लेना,
हर मंजिल को का लेना
यह गुरु मंत्र आपने बतलाया |
बार-बार है नमन आपको हे गुरुदेव!
प्रथम पूज्य हो आप हमारे
हाथ आपका गर शीश पर हो,
फिर चाहे डगर कितनी भी कठिन हो
मंजिल हो, जय हो, और विजय हो
और विश्वास भरी मुस्कान,
मेरे होठों पर हो
आशीर्वाद आपका जैसे हो जादू का पिटारा
फिर....
धरा, आसमान या क्षितिज का किनारा हो
जो भी हो! बस तुम्हारा और हमारा हो|

प्रथम पूज्य हो आप हमारे बार-बार है नमन आपको|

- जया तिवारी

लेखक परिचय

नाम – जया तिवारी

T.G.T – हिंदी (डॉन बॉस्को सीनियर सेकेंडरी स्कूल बेरीपड़ाव हल्द्वानी)

जिला – नैनीताल (उत्तराखंड)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ...... **जया तिवारी** ......जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित “**एक लेख प्रतियोगिता**” में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...